कविता

ओम शांति

- दिविक रमेश,
एल-1202, ग्रेंड अजनारा हेरिटेज,
सेक्टर-74, नोएडा - 201301
मो. 9910177099

दिविक रमेश,ओम शांति, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 1/सितंबर 2021,(75-77)

बचपन से सुनता आ रहा था।
बहुत परिचित था, इसलिए आसान भी।
खोजने लगा था शांति
अशांत होते ही।

सबसे करीब दिखा मुझे, ओम शांति।
थक गया था बार-बार झाड़कर,
टटोलकर
जाने कहाँ छिपी बैठी थी शांति।

जितने भी जानता था पर्यायवाची
सबमें देखा, ढूँढा
पर हाथ खाली थे।

यहाँ तक कि उलटा-पुलटा किया अंग्रेजी
और दूसरी जानकारी में बसी भाषाओं को भी,
पर नहीं मिली वह कहीं भी।

और देखिए, मिली भी तो वह कहाँ मिली , शैतान की नानी

लुका-छिपी के खेल-सी झांकती-दुबकती!

शान से छिपी बैठी थी वह
भूख को पछाड़ते
एक रोटी के टुकड़े में,
उसे निहारीती आँखों में उमड़ते
उम्मीद के सागर में!

मैंने बढ़ाए कदम
बहुत हौले, करने को धप्पा,
वह दौड़ पड़ी चंचल बच्ची-सी मुग्ध
हँसती, देती चुनौती।

और जाकर रुकी
गले मिल रहे उन तमाम बच्चों की हसरतों में
जो थे, तो महज बच्चे थे,
न धर्म थे, न वर्ण
न देश थे, न दुश्मन
नहीं थे वे कोई राजनीति भी
थे, तो महज बच्चे थे,
इतने मासूम, इतने नासमझ
कि जिन्हें अभी नहीं आया था आपस में लड़ना तक,
युद्ध तो अभी कोश तक में नहीं था।

कोशिश फिर की थी, पहुँचने को पास।
वह फिर फुदकी, सफेद कबूतर –सी,
और फुदक कर
जा बैठी उस मुडेर पर जहाँ बाँटने की कोशिश में लगे थे कुछ शासक
पृथ्वी को
और दबोचे खड़ी थीं उनकी गर्दनें

असंख्य कविताएँ
ब्रह्माण्ड की।

कितना खुश था मैं!
अब सही राह पर था मैं -
नहीं छिप पाएगी शांति
लुक जाए कहीं भी।
****